UN – 042

III Semester B.Sc. Examination, Nov./Dec. 2015
(Semester Scheme) (Repeaters) (2014-15 Only)
LANGUAGE HINDI – III
Hindi Natak, Pramukh Sahityakar Aur Sankshepan

Time : 3 Hours | Max. Marks : 100

I. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर **एक शब्द** या **वाक्य** में लिखिए। **(10×1=10)**

1) चाणक्य और चाणक्य के नाटककार कौन है ?
2) चाणक्य का दूसरा नाम क्या है ?
3) सुवास को रानी बनाने का प्रलोभन किस ने दिया ?
4) प्रजा को भडकानेवाला विक्षिप्त युवक कौन था ?
5) समय के हाथों कौन पराजित हुआ था ?
6) चन्द्रगुप्त किसके आश्रम में राष्ट्रसेवा का व्रत लेता है ?
7) कुसुमपुर के प्रेक्षागृह की नायिका कौन थी ?
8) रानी किसके ऊपर हत्या का आरोप लगाती है ?
9) राज-पुरुषों ने किसको रथ चक्र के नीचे कुचलकर मार डाला ?
10) कोपल को राज पुरुष बनाने का प्रलोभन किसने दिया था ?

BMSCW

II. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **तीन** का संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **(8×3=24)**

1) "हाँ, आर्या श्रेष्ठ ! ऐसा कुछ कीजिए कि इस राष्ट्र के लोग निर्भय होकर, खुले द्वार सोयें।"
2) "यह विश्वास प्रत्येक भारतीय नारी को होता है और यहीं से विश्वासघात की कहानी प्रारंभ होती है।"
3) "युद्ध साम्राज्य के निर्माण का एक अंग होता है और युद्ध में की गई हत्याओं का न्याय नहीं होता।"
4) "मैं जिस चन्द्रगुप्त को एक संपूर्ण व्यवस्थापक समझ बैठा था वह एक सुन्दर पाखंड निकला।"
5) "मेरे जैसा व्यक्ति जीवन को एक आँधी समझकर जीता है, उसे नहीं पता कि आँधी जीवन का एक टुकडा है।"

P.T.O.

III. किन्हीं **दो** प्रश्नों का उत्तर लिखिए । **(16×2=32)**

1) ''चाणक्य और चाणक्य''– नाटक का सारांश लिखिए।

2) ''चाणक्य और चाणक्य'' – नाटक की शिर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए।

3) ''चाणक्य और चाणक्य''– नाटक के आधार पर चाणक्य का चरित्र–चित्रण कीजिए।

IV. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए। **(7×2=14)**

1) कोपल

2) सुवास

3) चन्द्रगुप्त

4) अभिनव

BMSCW

V. किसी **एक** साहित्यकार का परिचय दीजिए । **(10×1=10)**

1) रामचन्द्र शुक्ला

2) उपेन्द्रनाथ अश्क

VI. निम्नलिखित अवतरण का उचित शिर्षक देते हुए एक तिहाई शब्दों से संक्षिप्तीकरण कीजिए। **(10×1=10)**

समाज के प्रति हमारे दो कर्तव्य है। पहला तो यह है कि हम समाज की परंपराओं का पालन करते हुए उनकी रक्षा करते रहें और दूसरा यह कि परम्पराओं को छोडकर समय तथा परिस्थितियों के अनुसार हम समाज के विकास में योग दें। हमारे इन दोनों कर्तव्यों का लक्ष्य आपस में मेल खाता दिखाई नहीं देता, क्योंकि एक में परम्पराओं का पालन है और दूसरे में उनका त्याग। यदि हम समाज की परम्पराओं का ही अधिक ध्यान रखें तो नवीनताओं के अभाव में समाज विकसित न होकर केवल रूढिवादी ही बनकर रह जायेगा। लकीर के पकीर होना विकास के लिए घातक है। इसके विपरीत, यदि हम परम्पराओं का त्याग करके समाज का विकास करने का प्रयत्न करेंगे तो समाज में नियम विहीनता और गडबडी होने का डर है, क्योंकि जनता के अधिकांश लोगों को अपनी परंपराओं से बहुत प्यार होता है। वे उन्हें सहज ही छोडने के लिए तैयार नहीं होते । यदि उनका विरोध किया जाये तो वे विद्रोह कर बैठते हैं। जिससे समाज की शांति भंग हो जाती है।